रिकॉर्ड:- इस पाप की दुनियाँ... ओम शान्ति प्रातःक्लास 18-4-67

बच्चों ने यह भक्तों का गीत सुना। अभी तुम ऐसा नही कहते हो। तुम तो कहते हो हमको ऊँच ते ऊँच बाप मिला है। बाकी जो भी इस समय के मनुष्य मात्र है वो है सब नीचे ते नीच। ऊँच ते ऊँच मनुष्य भी भारत के यह देवी देवताये ही है। भारत ऊँच ते ऊँच था। इनकी ही महिमा है सर्वगुणसम्पन्न... अब नीच मनुष्यों को यह भी पता नही कि इन देवताओं को इतना ऊँच किसने बनाया है। अभी तो बिलकुल ही पतित नीच हो गये है। यह है ही नीचों की तुच्छ बुधियों की दुनियाँ। बाप है ऊँच ते ऊँच। साधु सन्त आद सब उनकी साधना करते है। ऐसे साधुओं आद पिछाडी मनुष्य आधा कल्प से भटकते है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है। हम बाप के पास जाते है। श्रीमत पर वो हमको ऊँच ते ऊँच श्रेष्ट ते श्रेष्ट बनाते है। यहाँ है भ्रष्ट ते भ्रष्ट मत। माँ-बाप, चाचा, काका, गुरू गुसाईं आद जो भी है उनकी है नीच मत। जन्म जन्मान्तर उनकी मतपर तुम चलते आये हो। अभी कहते हो बाबा हम तो अब आपकी ऊँच ते ऊँच मत पर ही चलेंगे। बाप समझाते है इन गुरूओं आद ने तो तुमको डुबोया है। रावण राज्य में जो भी मनुष्य होंगे वो सब रावण की मत पर तुमको असुर दुःखी ही बनावेंगे। अब एकही बाप तुमको सुखी बनाते है। रावण की मत पर तुच्छ बुधी बने हो। अभी तुम और किसकी मत पर मत चलो। इन गुरूओं आद ने तो तुमको डुबोया है ~~अब इनकी मत पर मत चलो~~ तब तो मुझ पतित पावन को पुकारते हो। फिर भी डुबोनी वालों पिछाडी क्यों पड़ते हो। यह तो बेसमझ बुधी हुये ना। समझदार बनते ही नही है। एक की मत को छोड़ कर धक्के खाते ही रहेंगे गंगा स्नान करेंगे, गुरू पास जावेंगे। बाप कहते है वो गंगा कोई पतित पावन तो है नहीं। फिर भी तुम आसुरी मत पर चल कर जाकर गंगा स्नान आद करेंगे तो बाप कहेंगे कि मेरी ऊँच ते ऊँच मत पर तुमको भरोसा नही है। एक तरफ है ईश्वरिय मत। दूसरी
* ******** * *** ***************
तरफ है आसुरी मत। इनका हाल क्या होगा। दोनो तरफ पांव रखेंगे तो चिर पड़ेंगे। बाप में भी पूरा निश्चय नही रखते है। कहते भी है बाबा हम आपके है। आपकी श्रीमत पर ही हम श्रेष्ट बनेंगे। इन गुरू गुसाईयों आद की मत पर चल कर तो हम गिरे ही है। फिरभी तमोप्रधान बुधी होने कारण कुछ भी समझते नही है। हमको कदम-2 पर ऊँच ते ऊँच बाप की मत पर चलना है। शान्तिधाम सुखधाम का मालिक तो बाप ही बनावेंगे ना। फिर बाप कहते है जिसके शरीर में मैंने प्रवेश किया है उसने भी 12 गुरू किये है। यह भी तमोप्रधान ही बना है। फायदा कुछ भी नही हुआ। अब बाप मिला है तो सबको छोड़ दिया। ऊँच ते ऊँच बाप मिला फिर गुरू कितने भी किये ~~उनको~~ उनका तो अब मुहँ भी नही देखते। बाप ने कहा है ना हेयर नो ईविल सी... डुबोने वालों की तो शक्ल भी नही देखनी चाहिये। दुश्मन ठहरे ना। परन्तु मनुष्य है बिलकुल पतित तमोप्रधान बुधी। यहाँ भी बहुत है श्रीमत पर चल नही सकते है। ताकत ही नही है। माया धक्का खिलाती रहती है। क्योंकि रावण है दुश्मन। राम है मित्र। कोई राम कहते है कोई शिव कहते है। असली नाम है शिव बाबा। बाप कहते है हूँ तो मैं भी आत्मा परन्तु मुझ आत्मा का नाम शिव बाबा है। मैं कब पुनर्जन्म में नही आता हूँ। मेरा ड्रामा में नाम ही शिव रखा हुआ है। एक चीज के 10 नाम रखने से मनुष्य मूंझ जावेंगे। तमोप्रधान मनुष्य है ना। जिनको जो आता वो ही नाम रख देते है। असली मेरा नाम शिव है। मैं इस शरीर को धारण करता हूँ। मैं कोई कृष्ण आ में नही आता हूँ। ~~देवताओं~~ देवता भी है ब्र, वि, शं। परन्तु इन बातों को तुच्छ बुधी मनुष्य कुछ भी नही जानते है। सबको माया ने तुच्छ बुधी बना दिया है। वो समझते है विष्णु सूक्ष्म वतन में रहने वाला है। वास्तव में वो है युगल रूप प्रवृती मार्ग का। बाकी चार भुजाये कोई की होती नहीं है। चार भुजा माना प्रवृती मार्ग। दो भुजा है निवृती मार्ग। बाप ने प्रवृती मार्ग का धर्म स्थापन किया है। सन्यासी निवृती मार्ग के है। प्रवृती मार्ग वाले ही फिर पावन से पतित बनते है। इसलियेही सृष्टी को थमाने के लिये स सन्यासियों का पार्ट है। पवित्र बनने का। वो भी लाखों करोड़ों होंगे। मेला जब लगता है तो बहुत आते

आते है। वो खाना पकाते नही है। गृहस्थियों की पालना पर चलते है। कर्म सन्यास किया फिर भोजन कहाँ से मिले। तो गृहस्थियों से खाते है। गृहस्थी लोग समझते है यह भी हमारा दान होता है। दान हुआ फिर दूसरी तरफ पाप भी हुआ। क्योंकि वो मन्त्र ही उल्टा देते है। बेहद के बाप की ग्लानी कर देते है। इसलिये ही बाप कहते है जो भी गुरु आद किया है वो सब तुम्हारे शत्रु है। उनकी भी विनाश काले विपरीत बुधी है। तुम भी ऐसे ही कहते थे। यह भी ऐसे ही कह देते है थे ईश्वर सर्वव्यापी है जिधर देखता हूँ उधर भागवान ही भगवान है। यह नारायण की पूजा करते थे जानते थोड़ेई थे। यह भी पुजारी पतित था। फिर अब श्रीमत पर चल कर पावन बन रहा है। बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ कर रहे हो। तब कहते है फालो करो। माया हर बात में पछाड़ती बहुत है। देह-अभिमान से ही मनुष्य पाजी बनते है। बाबा पास बहुत सैन्टर्स से समाचार आता है कि फलाने सैन्टर पर आपस में बहुत लड़ते है। देह-अभिमान है। भल गरीब हो वा शाहुकार हो परन्तु देह-अभिमान भी जब टूटे ना। देह-अभिमान में तोड़ने में ही बड़ी मेहनत है। बाप कहते है तुम अपने को आत्मा समझ देह-से पटि बजाओ। तुम देह-अभिमान में क्यों आते हो। ड्रामा अनुसार देह-अभिमान में भी आना ही है। इस समय तो पक्के देह-अभिमानी बने पड़े हो। बाबा कहते है तुम तो आत्मा हो। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा ही कहती है कि मैं जज हूँ फलाना हूँ, आत्मा शरिर से निकल जावे शरिर को काटो तो शरिर से आवाज कुछ निकलेगा कुछ भी नही। आत्मा ही कहती है मैं शरिर को मत ~~देख्को~~ दुखाओ। आत्मा अविनाशी है। शरिर विनाशी है। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देह-अभिमान छोड़ो। जितना देहीअभिमानी बनेंगे उतना ही तंदरुस्त निरोगी भी रहेंगे। आयु भी बड़ी होगी। इस योगबल से ही तुम 21 जन्म तक निरोगी बनेंगे। जितना बनेंगे उतना ही पद भी ऊँच मिलेगा। सजा से बचेंगे। नही तो सजायें बहुत खानी पड़ेगी। इतने लाखो करोड़ों से देहीअभिमानी सिर्फ 8 बनते है। आठ की माला है ना। वो भी नम्बरवार है। तो कितना देही-~~अभिमान~~ अभिमानी बनना है। 8, फिर है 100, फिर है 1600 स्कूल में भी नम्बर्स तो होते है ना। कोई तो दास-दासियाँ बनते है फिर पिछाडी में करके थोडी राजाई मिलती है। एक जन्म राजाई मिलेगी बाकी सब जन्म नौकरी करते आवेंगे। फिर तो होता है रावण राज्य। उनकी प्रारब्ध पूरी हुई। यह बाते कोई शास्त्रों में नही है। साधु सन्त गुरु आद की तकदीर में भी ज्ञान है नही। जब तक कि तुम्हारे कुल में ना आवे। अर्थात ब्राह्मण सुख वंशावली ना बने। ब्राह्मण बनने बिना देवता कैसे बन सकेंगे। भल आते बहुत है। बाबा लिखते अथवा कहते भी है परन्तु सिर्फ कहने ही मात्र। एक दो पत्र लिखे फिर गुम। वो भी आवेंगे परन्तु प्रजा में। प्रजा तो बहुत बननी है ना। आगे चल कर जब बहुत दुःख होगा तो बहुत भागेंगे। आवाज होगा भगवान आया है। तुम्हारे भी बहुत सैन्टर्स खुल जावेंगे। तुम बच्चों का भी दोष है। देहीअभिमानी बनते नही हो बहुत देहअभिमान है। फिर पद भी कम हो जावेगा। फिर जाकर दास-दासियाँ बनेंगे। दास-दासियाँ भी नम्बरवार ढेर की ढेर होते है। राजाओं को दासियाँ दहेज में मिलती है। शाहुकारों को नही मिलती। राजाये दहेज में ले जाते है। वहाँ पर भी ऐसा ही होता है। बच्चों ने देखा है राधा कितनी दासियाँ दहेज में ले जाती है। आगे चल कर तुमको बहुत साo होंगे। हल्की दासी बनने से तो शाहुकार प्रजा बनना अच्छा है। ~~पिछाड़ी~~ दासी को पिछाडी में जाकर एकदो जन्म राजाई मिलेगी। दासी अक्सर ही खराब है। प्रजा में शाहुकार बनना फिर भी अच्छा है। बाप का बनने से माया और ही अच्छी रीती खाती करती है। मस्तम से मस्तम होकर लड़ती है। देह-अभिमान आ जाता है। शिव बाबा से भी बेअदब हो जाते है। बाप को याद करना ही छोड़ देते है। कब बाबा को पत्र भी नही लिखते है। पत्र लिखने में कोई समय नही लगता है। फिर झूठ बोलते कि फुरसत नही मिली। खाने की फुरसत है? और ऐसा बाबा जो विश्व का मालिक बनाते है उनको एक कार्ड लिखने की फुरसत नही है। बाबा हम राजी खुशी है।

सर्विस कर रहे हैं। अच्छे-2 बच्चे पत्र नहीं लिखते हैं। खाने की कपड़े पहनने की फुरसत है, बाकी कोई लिखने की फुरसत नहीं है? शिव बाबा को भूल कर देहअभिमान में आ जाते हैं इसलिये ही फिर बहाना कर करते हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो जरूर ख्याल आवेगा कि ऐसा बाप जो हमको जीवनदान देता है उनको पत्र लिखूं। स्त्रीयों का पति के साथ प्यार होता है तो रोज पत्र लिखती हैं। पत्र नहीं आवे तो तड़फती है। यहाँ तो बात मत पूछो। माया एकदम नाक से पकड़ कर उड़ा देती है। कदम-2 पर श्रीमत पर पदम है। तुम्हारे भी कदम-2 पर पदम है। तुम अनगिनत धनवान बनते हो। वहाँ गिनती होती ही नहीं है। धन दौलत खेती बाड़ी सब मिलती है। वहाँ पर ताँबा पीतल आद होता ही नहीं है। सोने के ही सिक्के होते हैं। मकान ही सोने के बनाते हैं तो बाकी क्या नहीं होगा। यहाँ तो गवर्मेन्ट प्रजा से लेकर भी छीनती जाती है। समझते थोड़ेई हैं आसुरी बुधी। कोई को कहो तो बिगड़ पड़े। गवर्मेन्ट के ही आफीसर्स कहते हैं कि यह तो राक्षस राज्य है। भ्रष्टाचारी राज्य है। तो सब भ्रष्टाचारी ही हो गये। यथा राजा रानी तथा प्रजा। सतयुग में यथा राजा रानी तथा प्रजा सब श्रेष्टाचारी होते हैं। परन्तु मनुष्यों की बुधी में यह बैठता थोड़ेई है। सब तमोप्रधान हैं। बिलकुल ही जंगली जनावर हैं। बाप समझाते हैं कि तुम भी ऐसे ही थे। यह भी ऐसा ही था। जंगली जनावरों को ही आकर अब ऐसा देवता बनाता हूँ। तो भी बनते नहीं हैं। आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते हैं। मैं पहलवान हूँ ऐसा हूँ। यह कोई समझते थोड़ेई हैं कि दोजख में पड़े हुये हैं। हम नर्कवासी हैं। रौरव नर्क में पड़े हुये हैं। यह भी तुम्ही बच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बिलकुल नर्क में पड़े हैं। रात-दिन चिन्ताओं में ही सड़ते मरते रहते हैं। आप समान बनाने की सर्विस नहीं करते हैं तो बिमार रोगी हो जाते हैं। अब बाप कहते हैं और कोई का मत सुनो। मुझे ही याद करो। दूसरे कोई को याद किया तो व्यभचारी ठहरे। मनुष्य तो असुर हैं ना। देवताओं को याद करें तो भी बेहतर है। मनुष्य को याद करने से कोई फायदा नहीं होगा। मनुष्य गुरू आद सब पतित हैं ना। देवतायें तो फिर भी पवित्र हैं। आज कल तो मनुष्यों के गुरूओं के पुजारी बन गये हैं। गुरू का लाकेट पहनते हैं। तो गोया बड़ा गुरू हो गया। बाप कहते हैं इस समय के गुरू आद सब हैं राक्षस। बाप से ही बेमुख कर देते हैं। इसलिये ही इनका नाम रखा है हरणाकश्यप। इसलिये गाया भी जाता है गुरू जिसका अन्धला चेले.... सब तमोप्रधान हैं। बाप को ही गाली देते रहते हैं। बाप कहते हैं जब-2 मैं आता हूँ, तुम मुझे गाली ही देते रहते हो कच्छ अवतार मच्छ अवतार। मैं तो कहता हूँ मनुष्य-2 ही बनते हैं। मुझे फिर कच्छ-मच्छ अवतार कह देते हो। उनकी तुम टाँग छोड़ते नहीं हो। यहाँ बाप किसको भी टाँग पकड़ने नहीं देते हैं। कहते हैं सिर क्यों झुकाते हो? शिव बाबा को पाँव थोड़ेई है जो तुम सिर झुकाते हो। इसलिये शिव बाबा कहते हैं कि जब गोद में भी आओ तो शिव बाबा को याद करके आओ। शिव बाबा को याद नहीं करते हो तो गोया पाप करते हो, और पवित्र हो तो गोद ले सकते हो। पतित हो तो गोया मेहतर हो। मूत पीते हो ना। तो फिर बाबा तो कहते हैं मेरे शरीर को भी टच नहीं करो। पहले तो पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो तब गोद ले सकते हो। सो भी शिव बाबा को याद करके। शिव बाबा हम इसमें आप को समझ कर झाँकी पहनते हैं। समझ चाहिये ना। बहुत परहेज है। बहुत मुश्किल कोई समझते हैं। इतनी बुधी नहीं है बाप से कैसे चला जावे। इसमें तो बड़ी मेहनत है। माला का दाना बनना कोई मासी का घर थोड़ेई है। शरीर पर भरोसा तो है नहीं तो डर रहना चाहिये ना। अभी कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। मुख्य है बाप को याद करना है। तुम बाप को याद कर नहीं सकते हो। बाबा की सर्विस बाप की याद कितनी चाहिये। बाबा रोज कहते हैं पोतामेल निकालो। कल्याण के लिये बाबा कितना समझाते रहते हैं। सब प्रकार की परहेज चाहिये। जाँच करनी है हमारा खान-पान ऐसा तो नहीं। हब्शी तो नहीं हूँ। माया चक लगा कर उल्टा सुल्टा काम कराती ही रहती है। बचना है। ओम